Ey – यीशु की माँ और भाई मत्ती १२:४६-५०; मरकुस ३:३१-३५; लूका
८:१९-२१ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु की माँ और भाई

मत्ती १२:४६-५०; मरकुस ३:३१-३५; लूका ८:१९-२१

खोदाई: भीड़ को क्या उम्मीद थी? बढ़ते विवाद के आलोक में, यीशु की माँ और भाई उससे बात करने के लिए क्यों उत्सुक हो सकते हैं (मरकुस ३:२०-२१ देखें)? प्रभु ने क्या कहा कि उनके साथ पारिवारिक रिश्ते का आधार क्या है? हम कैसे जानते हैं कि ये नाज़रीन के अपने भाई-बहन थे, जो एक ही गर्भ से थे, न कि उसके चचेरे भाई? क्या प्रभु की इच्छा पूरी करना एक कार्य है या एक विश्वास (लूका ६:४६ और यूहन्ना ६:२९ देखें)? रोमन कैथोलिक चर्च किन सात क्षेत्रों में मरियम को यीशु से ऊपर रखता है?

चिंतन: इस सप्ताह आपके जीवन से, क्या अन्य लोग आपको येशुआ के “भाई या बहन” या एक दूर के रिश्तेदार के रूप में देखेंगे जिसके बारे में कोई भी पारिवारिक समारोहों में बात नहीं करना चाहता है? क्यों? आप अपने भीड़ भरे जीवन के बीच यीशु के करीब कैसे पहुँचते हैं?



समुद्र के किनारे अपने दृष्टांतों को समाप्त
करने के बाद (देखें Es – समुद्र के किनारे राज्य के सार्वजनिक दृष्टांत), मसीहा अपने शिष्यों के साथ कफरनहूम में पतरस के घर लौट आए। किसी समय उन्हें यह बताया गया कि उनकी माँ और सौतेले भाई घर के बाहर खड़े होकर उनसे अकेले में मिलना चाहते थे। परिवार पहले से ही कुछ समय से कफरनहूम के एक उपनगर में रह रहा था। मरियम के पति और यीशु के सौतेले पिता जोसेफ की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। लेकिन फिर घर में थोड़ी भीड़ जमा हो गई. यह इतना भरा हुआ था कि ईसा मसीह और उनके प्रेरित इसे खा भी नहीं पा रहे थे (मरकुस ३:२०)।

यीशु के चार सौतेले भाई थे (Fj भी देखें – क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसके भाई जेम्स, जोसेफ, साइमन और जूड नहीं हैं?), और कई सौतेली बहनें थीं, जिनका नाम नहीं है (मत्ती १३:५५-५६). ये भाई पहले उसकी सेवकाई में उसके प्रति मैत्रीपूर्ण थे (यूहन्ना २:१२); लेकिन नाज़ारेथ में गैलीलियन रब्बी को अस्वीकार

Ey – यीशु की माँ और भाई मत्ती १२:४६-५०; मरकुस ३:३१-३५; लूका
८:१९-२१ | 2

किए जाने के बाद (देखें Ch– प्रभु की आत्मा एक मैं हूं) वे उसके दावों से खुद को दूर करते दिखे। बाद में उन्होंने उसे “गुप्त मसीहा” कहकर उसका उपहास किया (यूहन्ना ७:५)।

वर्तमान समय में वे अविश्वासी और उदासीन थे, न कि शत्रुतापूर्ण, या कम से कम परिवार की खातिर किसी प्रकार के शांत और सम्मानजनक जीवन के पक्ष में मसीह के कार्य में हस्तक्षेप करने के लिए तैयार थे। उसके कारण उन्हें नाज़रेथ से हटने के लिए मजबूर किया गया था और अब यरूशलेम से फरीसी और टोरा-शिक्षक कफरनहूम में मौजूद थे और महासभा की ताकत उसके खिलाफ थी। मरियम अपने बेटे के करीब रहना चाहती थी, और जोसेफ की मृत्यु के बाद अपनी माँ की देखभाल करना उनकी ज़िम्मेदारी थी। उन्हें शायद लगा कि अब हस्तक्षेप करना बेहतर होगा, अन्यथा उनके इस भाई का कट्टर उत्साह उन्हें और उनकी माँ को दूसरे कदम की असुविधा और कठिनाई का सामना करने के लिए मजबूर कर सकता है।

निःसन्देह उन्होंने उस निन्दा के विषय में सुना था जो फरीसियों और यरूशलेम से आए टोरा-शिक्षकों द्वारा उसके विषय में कही गई थी। उन्होंने कहा कि बील्ज़ेबब ने उस पर कब्ज़ा कर लिया! दुष्टात्माओं के सरदार के द्वारा वह दुष्टात्माओं को निकाल रहा है (मत्ती १२:२४; मरकुस ३:२२; लूका ११:१५; यूहन्ना ७:२०)। जब प्रभु के परिवार ने सुना कि वह अपने काम में इतना तल्लीन है कि वह अपनी शारीरिक जरूरतों का भी ध्यान नहीं रख पा रहा है, तो वे उसकी जिम्मेदारी लेने गए। शायद इसका मतलब यह था कि उन्होंने उसे वापस नाज़रेथ ले जाने का फैसला किया। वे उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक ले जाने का इरादा कर रहे थे, क्योंकि उन्होंने कहा: वह उसके दिमाग से बाहर है (मरकुस ३:२१)। मेशियाच के अपने परिवार को एहसास हुआ कि कुछ बहुत अलग था। लेकिन उन्होंने उसके कार्यों की गलत व्याख्या की और सोचा कि उसे खुद से बचाने की जरूरत है। उनका उत्साह उन्हें पागलपन की सीमा तक पहुँचता हुआ प्रतीत हुआ। मसीह के उपचार मंत्रालय ने इसे समझाने के लिए सिद्धांतों की माँग की। हेरोदेस के पास अपना सिद्धांत था (मत्ती १४:१-१२), फरीसियों और तोरा-शिक्षकों के पास अपना सिद्धांत था, और यीशु के परिवार के पास अपना सिद्धांत था।

येशुआ के भाइयों और बहनों ने उनके मंत्रालय की तीव्रता देखी थी और शायद उन्होंने आपस में तर्क किया था कि उनका उत्साह कट्टरता पर आधारित था। उनके चेहरे पर घबराहट का तनाव झलक रहा था। वह थका हुआ लग रहा था. उन्होंने संभवतः मरियम को अपने साथ आने और अपने सबसे बड़े बेटे को घर लाने के लिए मना लिया और उत्साह को कम होने दिया, जबकि उसे कुछ आवश्यक आराम मिला। इसलिए परिवार के सभी लोग एक साथ पतरस के घर आये। निश्चित रूप से वह उनकी ओर से रुचि और एकजुटता दिखाने से सहमत होंगे। आखिरकार, वे उनके अपने मांस और खून थे!

जब यीशु अभी भी भीड़ से बात कर रहे थे, जो उनके चारों ओर एक घेरे में बैठी थी (टैल्मिडिम स्वाभाविक रूप से आंतरिक घेरा बना रहे थे और उनके पीछे अन्य शिष्य थे

Ey – यीशु की माँ और भाई मत्ती १२:४६-५०; मरकुस ३:३१-३५; लूका
८:१९-२१ | 3

और आंशिक रूप से उनके साथ मिलकर घर भर रहे थे), उनकी माँ और भाई (एडेल्फ़ोस) बाहर खड़े थे, उससे बात करना चाहता हूँ. परन्तु भीड़ के कारण वे उसके निकट न पहुँच सके (मत्ती १२:४६; लूका ८:१९)। इसलिए, उन्होंने उसे बुलाने के लिए किसी को भेजा (मरकुस ३:३१)।

तब परिवार के अनुरोध पर एक निश्चित व्यक्ति ने अपना रास्ता रोक लिया और प्रभु को रोकते हुए कहा: आपकी माँ और भाई (एडेलफोस) बाहर खड़े हैं और आपसे बात करना चाहते हैं (मत्ती १२:४७; मार्क ३:३२; ल्यूक ८:२०). मसीहा की मां और भाइयों और बहनों के आगमन ने उन्हें मरियम को उचित पूजा देने का पूरा मौका दिया, जिसकी कैथोलिक चर्च सिखाती है कि वह हकदार है। लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया. इसके विपरीत, उन्होंने अपने साथ व्यक्तिगत संबंध की आवश्यकता का एक ग्राफिक चित्रण दिया।

कमरे में हलचल मची होगी क्योंकि भीड़ शांत थी। वे क्या चाहते थे? स्थिति तनावपूर्ण थी. यीशु अभी-अभी खूंखार फरीसियों और टोरा-शिक्षकों पर विजयी हुए थे। लेकिन अब उनके परिवार ने, चाहे डर से या स्नेह से प्रेरित होकर, उनके मंत्रालय को बाधित कर दिया। उसे इसके बारे में क्या करना चाहिए? उसने अपने आस-पास बैठे लोगों को उत्तर दिया: मेरी माता कौन है, और मेरे भाई कौन हैं (एडेलफोस) (मरकुस ३:३३)? संदर्भ ग्रीक शब्द एडेलफोस के उपयोग को निर्धारित करता है। यहां सन्दर्भ माँ और भाई या परिवार से है।

तब अभिषिक्त व्यक्ति ने अपने चारों ओर एक घेरे में बैठे लोगों की ओर देखा (देखें Ez– सदन में राज्य के निजी दृष्टांत) और अपने प्रेरितों की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा: यहां मेरी मां और मेरे भाई (एडेलफोस) हैं। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है, वह मेरा भाई (एडेल्फ़ोस) और बहन (एडेल्फ़े) और माता है (मत्तीयाहु १२:४८-५०; मरकुस ३:३४-३५)। उनके शब्दों ने दोहरा अर्थ व्यक्त किया। पहला, अपनी मां और भाइयों (एडेलफोस) को इस बात पर ध्यान केंद्रित करने के लिए निर्देशित करना कि सबसे ज्यादा क्या मायने रखता है, परमेश्वर के वचन को सुनना और उसका पालन करना, और दूसरा, उन्हें उसके साथ एक सच्चे रिश्ते के लिए मार्गदर्शन करना जो किसी भी शारीरिक रक्त संबंध से परे हो।

इस बिंदु पर, हमारे उद्धारकर्ता यहां अपने राज्य की आध्यात्मिक प्रकृति को स्पष्ट रूप से सिखाते हैं। यह एक महान आध्यात्मिक परिवार बनना है। वे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करेंगे और उनके सच्चे आध्यात्मिक परिवार हैं। येशुआ का अपना सांसारिक परिवार, यहाँ तक कि उसकी अपनी माँ भी उसे समझने में असफल रही (कम से कम इस अवसर पर)। यह समझना अच्छा है कि उसके परिवार ने बाद में उसे और अधिक अच्छी तरह से समझा, लेकिन ऐसा उसके पुनरुत्थान के बाद ही हुआ।

यदि मरियम के पास मसीह पर प्रभाव और अधिकार होता जैसा कि रोम के चर्च द्वारा दावा किया गया है, तो उसने उसे वैसा उत्तर नहीं दिया होता जैसा उसने दिया था, बल्कि उसे

Ey – यीशु की माँ और भाई मत्ती १२:४६-५०; मरकुस ३:३१-३५; लूका
८:१९-२१ | 4

देखने के उसके अनुरोध का तुरंत सम्मान किया होता। यहां फिर से हमारे पास शास्त्रीय प्रमाण हैं कि मरियम का उद्धार के संबंध में ईश्वर के पुत्र के मंत्रालय से कोई लेना-देना नहीं है। वास्तव में, वह सभी सांसारिक रिश्तों को अस्वीकार करता है, और केवल आध्यात्मिक रिश्तों को स्वीकार करता है। फरीसियों ने इब्राहीम से अपने भौतिक संबंधों के आधार पर ही स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के अधिकार का दावा किया। लेकिन यीशु ने जो बात कही वह यह थी कि केवल वे ही प्रवेश करेंगे जो इब्राहीम का आध्यात्मिक बीज हैं।

यीशु के शब्दों ने स्वयं के लिए, और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से, उसकी माँ के लिए एक क्रांतिकारी मोड़ को चिह्नित किया। वह परिवार को पुनर्परिभाषित कर रहे थे। जैविक संबंध, जो संपूर्ण बाइबिल में प्रबल हैं, येशुआ या उसका अनुसरण करने वालों के लिए सबसे मजबूत संबंध नहीं हैं। ईश्वर का राज्य जैविक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक है। प्रभु का परिवार रक्तवंश, जीव विज्ञान या आनुवंशिकी पर नहीं, बल्कि मसीहा के रक्त और यहोवा और उनके वचन के प्रति साझा प्रतिबद्धता पर बना है। पारिवारिक बंधन जो परमेश्वर के परिवार को एक साथ बांधते हैं, उनके वचनों को सुनने और अभ्यास में लाने से आते हैं।

यीशु मरियम को सुसमाचार दे रहे थे, जो आशीर्वाद का एकमात्र मार्ग था। यह सुनने में भले ही चौंकाने वाला लगे, लेकिन शारीरिक रूप से मसीहा को जन्म देने का अंततः कोई मतलब नहीं था अगर मरियम ने कभी अपने बेटे की शिक्षाओं को नहीं सुना, उन पर विश्वास नहीं किया और उनका पालन नहीं किया। जीवन में उसका सच्चा आह्वान – और उसके साथ एकमात्र बंधन जो मायने रखता है – उसके शब्दों को सुनना, उन पर विश्वास करना और उनके अनुसार जीना था। उनका सबसे बड़ा आह्वान पापियों के उद्धारकर्ता का अनुसरण करना और उनके बेटे की तरह बनकर पारिवारिक समानता विकसित करना था। जो व्यक्ति ईसा मसीह द्वारा अपनी जैविक मां के बारे में कहे गए शब्दों को दिल से लेता है, वह दुनिया के एकमात्र परिवार से होता है जो वास्तव में यीशु के पूर्ण भाई या बहन या मां के रूप में मायने रखता है। यह हम सभी के लिए सबसे महत्वपूर्ण पारिवारिक वृक्ष है।

यीशु को पता था कि वह अपनी माँ के सामने क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। निःसंदेह, मरियम अंत तक इस बात से अनभिज्ञ थी। इसलिए अपने पूरे जीवन में, येशुआ ने न केवल उसकी माँ होने के नाते, बल्कि उससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उसके शिष्य होने के नाते उसकी खुद की धारणा को जोड़कर उसे उस घटना के लिए तैयार किया। तो क्या कठोर या निर्दयी शब्दों के रूप में माना जा सकता है जैसे: आप मुझे क्यों खोज रहे थे? क्या तुम नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में रहना है (लूका २:४९)? या संभवतः, महिला, मुझे इसकी चिंता क्यों होनी चाहिए (यूहन्ना २:४ए सीजेबी)? वास्तव में दया और करूणा के शब्द थे।

जब चर्च शवूओट के त्योहार पर शुरू हुआ, तो स्वर्ग के नीचे केवल एक ही नाम दिया गया

Ey – यीशु की माँ और भाई मत्ती १२:४६-५०; मरकुस ३:३१-३५; लूका
८:१९-२१ | 5

था जिसके द्वारा हमें बचाया जाना चाहिए, वह यीशु मसीह था (प्रेरितों ४:१२)। जहां भी हमें अनुग्रह के दाता की ओर निर्देशित किया जाता है, मरियम का कभी उल्लेख नहीं किया जाता है। निश्चित रूप से यह चुप्पी उन लोगों के लिए एक फटकार है जो उसके चारों ओर मुक्ति की व्यवस्था का निर्माण करेंगे। पवित्र आत्मा परमेश्वर ने हमें पवित्रशास्त्र में मरियम के संबंध में वह सभी अभिलेख दिए हैं जिनकी हमें आवश्यकता है, और उद्धार के लिए कभी किसी ने मरियम को पुकारा हो इसका कोई अभिलेख नहीं है। फिर भी, रोमन कैथोलिक चर्च सिखाता है कि मरियम सात अलग-अलग तरीकों से ईसा मसीह से श्रेष्ठ है।

सबसे पहले, रोमन कैथोलिक चर्च मरियम को ईसा मसीह से ऊंचे स्थान पर रखता है। १९३१ में बिशप अल्फोंस डी लिगुरी द्वारा लिखित और १९४१ में संशोधित द ग्लोरीज़ ऑफ मरियम को कैथोलिक सिद्धांत के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है। यह परोक्ष रूप से प्रोटेस्टेंट सुधार का मुकाबला करने के लिए वेटिकन II के १६वीं शताब्दी के संस्करण, ट्रेंट की परिषद का एक उत्पाद था। आज बाल्टीमोर कैटेचिज़्म के रूप में जाना जाता है, इसका अभी भी व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और इसे कभी भी अस्वीकार नहीं किया गया है। इसमें मरियम को मसीह से संबंधित स्थान दिया गया है, “और वह वास्तव में पापियों और परमेश्वर के बीच शांति की मध्यस्थ है। पापियों को क्षमा मिलती है। . . मरियम अकेली” (द ग्लोरीज़ ऑफ़ मरियम, पृष्ठ ८२-८३)। लेकिन बाइबल घोषणा करती है: क्योंकि ईश्वर एक है और ईश्वर और मानव जाति के बीच एक मध्यस्थ है, अर्थात् मसीह यीशु (प्रथम तीमुथियुस २:५)।

दूसरा, कैथोलिक चर्च ईसा मसीह से अधिक मरियम का महिमामंडन करता है। “बहुत सी बातें । . . परमेश्वर से मांगे जाते हैं, और दिए नहीं जाते; हालाँकि, [जब] उन्हें मरियम से पूछा जाता है, तो वे प्राप्त हो जाते हैं,” यहां तक कि “वह” नर्क की रानी और शैतानों की संप्रभु स्वामिनी भी है” (द ग्लोरीज़ ऑफ मरियम, पृष्ठ १४१ और १४३)। लेकिन परमेश्वर का वचन कहता है: यीशु मसीह के नाम पर। . . क्योंकि स्वर्ग के नीचे मानवजाति को कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हम बच सकें (प्रेरितों ३:६ और ४:१२)। उसका नाम सभी शासन और अधिकार, शक्ति, प्रभुत्व और हर नाम से बहुत ऊपर है। . . न केवल वर्तमान युग में, बल्कि आने वाले युग में भी (इफिसियों १:२१)।

तीसरा, रोमन चर्च का मानना है कि ईसा मसीह के बजाय मरियम स्वर्ग का द्वार हैं। “मरियम को बुलाया जाता है। . . स्वर्ग का द्वार क्योंकि कोई भी उससे गुज़रे बिना उस धन्य राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता” (द ग्लोरीज़ ऑफ़ मरियम, पृष्ठ १६०)। ” उद्धार का मार्ग मरियम के अलावा किसी और के लिए खुला नहीं है” और चूंकि “हमारा उद्धार मरियम के हाथों में है।” . . [वह] जो मरियम द्वारा संरक्षित है, बच जाएगा, और [वह] जो नहीं है वह खो जाएगा” (द ग्लोरीज़ ऑफ़ मरियम, पृष्ठ १६९ और १७०)। हालाँकि, मसीह ने कहा: मैं द्वार हूँ; जो कोई मेरे द्वारा प्रवेश करेगा वह उद्धार पाएगा (यूहन्ना १०:९ए), और मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं। मेरे द्वारा छोड़े बिना

Ey – यीशु की माँ और भाई मत्ती १२:४६-५०; मरकुस ३:३१-३५; लूका
८:१९-२१ | 6

कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता (यूहन्ना १४:६)।

चौथा, कैथोलिक चर्च मरियम को ईसा मसीह की शक्ति देता है। “स्वर्ग और पृथ्वी पर सारी शक्ति तुम्हें दी गई है,” ताकि “मरियम की आज्ञा का सभी पालन करें – यहाँ तक कि ईश्वर भी।” . . इस प्रकार । . . परमेश्वर ने पूरे चर्च को रखा है। . . मरियम के प्रभुत्व के तहत” (द ग्लोरीज़ ऑफ मरियम, पृष्ठ १८०-१८१)। मरियम “संपूर्ण मानव जाति की वकील भी हैं।” . . क्योंकि वह परमेश्वर के साथ जो चाहे वह कर सकती है” (द ग्लोरीज़ ऑफ़ मरियम, पृष्ठ १९३)। हालाँकि, परमेश्वर का वचन कहता है: स्वर्ग और पृथ्वी पर सारी शक्ति मुझे दी गई है ताकि यीशु के नाम पर हर घुटना झुके और वह शरीर, चर्च का प्रमुख हो। . . ताकि हर चीज़ में उसका प्रभुत्व हो (मत्ती २८:१८; फिलिप्पियों २:९-११; कुलुस्सियों १:१८)। परन्तु यदि कोई पाप करता है, तो पिता के पास हमारा एक वकील है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह। वह हमारे पापों का प्रायश्चित बलिदान है, और न केवल हमारे पापों के लिए, बल्कि सारे संसार के पापों के लिए भी (प्रथम यूहन्ना २:१-२)।

छठा, कैथोलिक चर्च सिखाता है कि ईसा मसीह के बजाय मरियम शांतिदूत हैं। “मरियम पापियों और ईश्वर के बीच शांति स्थापित करने वाली है” (द ग्लोरीज़ ऑफ़ मरियम, पृष्ठ १९७)। “यीशु के नाम का आह्वान करने की तुलना में मरियम का नाम पुकारने से हम अक्सर जो मांगते हैं वह अधिक शीघ्रता से प्राप्त हो जाता है।” “वह . . हमारा उद्धार, हमारा जीवन, हमारी आशा, हमारी सलाह, हमारा आश्रय, हमारी सहायता है” (द ग्लोरीज़ ऑफ मरियम, पृष्ठ २५४ और २५७)। परन्तु शुक्र है, बाइबल सिखाती है: परन्तु अब मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट आ गए हो। क्योंकि वह आप ही हमारी शान्ति है (इफिसियों २:१३-१४अ)। और: अब तक तुमने मेरे नाम पर कुछ भी नहीं माँगा। माँगो, और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वह तुम्हें मिलेगा, मेरा पिता तुम्हें देगा (यूहन्ना १६:२३-२४)।

सातवां, रोमन कैथोलिक चर्च मरियम को वह महिमा देता है जो ईसा मसीह की है। “हे मरियम, संपूर्ण त्रिमूर्ति ने तुम्हें एक नाम दिया है। . . हर दूसरे नाम से ऊपर, कि तुम्हारे नाम पर, स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे की सभी चीजों के घुटने झुकें” (द ग्लोरीज़ ऑफ़ मरियम, पृष्ठ २६०)। हालाँकि, ब्रिट चादाशाह इस विधर्म का उत्तर देता है जब यह कहता है: इसलिए परमेश्वर ने उसे सर्वोच्च स्थान पर पहुंचाया और उसे वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है, यीशु के नाम पर हर घुटने को झुकना चाहिए, स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृय्वी के नीचे, और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर जीभ यह मान लेती है कि यीशु मसीह प्रभु है (फिलिप्पियों २:९-१०)।

यह कहना अतिशयोक्ति होगी कि प्रत्येक कैथोलिक मरियम के इस सिद्धांत में विश्वास नहीं करता है, और ऐसे कई सच्चे विश्वासी हैं जो रोम की शिक्षा के बावजूद बचाए गए हैं। मेरी पत्नी को कैथोलिक चर्च से बचा लिया गया। हालाँकि, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि यह अभी भी कैथोलिक चर्च का आधिकारिक सिद्धांत बना हुआ है और

Ey – यीशु की माँ और भाई मत्ती १२:४६-५०; मरकुस ३:३१-३५; लूका
८:१९-२१ | 7

दुनिया भर के कैथोलिक संकीर्ण स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाया जाता है।

रोमन कैथोलिक चर्च मरियम की शाश्वत कौमार्यता के मिथक को कायम रखने के लिए इन छंदों का उपयोग करता है। जब पवित्र आत्मा ने उसे गर्भवती किया तब वह कुंवारी थी। लेकिन बाद में उनके पति जोसेफ के साथ सामान्य यौन संबंध रहे और उनका एक परिवार बन गया। चाहे प्रेरित सुसमाचार लेखकों ने भाई के लिए पुल्लिंग एडेलफ़ोस का उपयोग किया हो, या बहन के लिए स्त्रीलिंग एडेल्फ़ का, उन दोनों का मूल एक ही है, और उनका अर्थ एक ही गर्भ से है।

रोमन कैथोलिक चर्च इन्हें चचेरे भाई-बहन के रूप में समझाने का प्रयास करता है, और इसलिए ये मरियम और जोसेफ की संतान नहीं हैं। हालाँकि, बाइबिल ग्रीक में चचेरे भाई के लिए एक अलग शब्द है, जो एनेप्सियोस है। मेरा साथी कैदी अरिस्टार्चस आपको नमस्कार भेजता है, जैसा कि बरनबास का चचेरा भाई (एनेप्सियोस) मार्क भी करता है (कुलुस्सियों ४:१०)। यह सच है कि रिश्तेदार के लिए एक और सामान्य ग्रीक शब्द है। यहां तक कि आपके रिश्तेदार एलिजाबेथ (सुग्गेन्स) को बुढ़ापे में एक बच्चा होने वाला है, और कहा जाता है कि वह अपने छठे महीने में गर्भधारण करने में असमर्थ है (लूका १:३६)। लेकिन यहाँ चचेरा भाई या रिश्तेदार दोनों शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है। सर्वोत्तम स्थिति में, यह ख़राब विद्वता है; और सबसे खराब स्थिति में, यह उनके पूर्वकल्पित धर्मशास्त्र में फिट होने के लिए धर्मग्रंथों को तोड़ने-मरोड़ने का एक ज़बरदस्त प्रयास है।

मसीहा ने उत्तर दिया: मेरी माता और भाई वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर अमल करते हैं (लूका ८:२१)। क्या यीशु को कठिन रिश्तेदारों से निपटने के बारे में कुछ कहना है? क्या मसीह द्वारा एक दर्दनाक परिवार में शांति लाने का कोई उदाहरण है? हाँ वहाँ है। अपने ही। आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि परमेश्वर का एक परिवार भी था। आप शायद इस बात से अवगत नहीं होंगे कि मसीहा के भाई-बहन थे, या उसका परिवार परिपूर्ण से भी कम था। वह थे। यदि आपका परिवार आपकी सराहना नहीं करता है, तो हिम्मत रखिए, येशुआ की भी नहीं।

फिर भी उसने उनके व्यवहार को नियंत्रित करने की कोशिश नहीं की, न ही उसने उनके व्यवहार को अपने व्यवहार पर नियंत्रण करने दिया। उसने यह मांग नहीं की कि वे सभी उससे सहमत हों। जब उन्होंने उसका अपमान किया तो वह नाराज नहीं हुआ। उसने उन्हें खुश करना अपने जीवन का मिशन नहीं बनाया। वे पापी थे (हाँ मरियम भी), और उन्हें हर किसी की तरह उसे स्वीकार करने या अस्वीकार करने की स्वतंत्रता थी।